nc 36

पुस्तक संख्या :—



ॐ

ईशोपनिषद

مبدء العرفان



अनुवादक व प्रकाशक—

पण्डित कालीचरन शर्मा

अरबी फाज़िल

॥ ओ३म् ॥

भाषार्थ



प्रिय सज्जन वृन्द तथा सहृदयहृदय गण ! आप लोगों की सेवा में मैं इस अमृत को अर्पण कर रहा हूं जिसको कि हमारे तथा आपके पूर्वज तथा ऋषि महर्षियों ने अपना हृदय जान उसकी प्राप्ति के लिये ये अपनी अपूर्व कर्त्तव्यपरायणता दिखलाई थी। इतना ही नहीं बल्कि उसी अमृत को प्राप्त करके अमृत होगये थे। माननीय महोदय ! वह अमृत क्या है। यह वह अमृत है कि सृष्टि के प्रारंभ में ईश्वर की ओर से पवित्रात्माओं द्वारा जो ईश्वरीय ज्ञान मनुष्य मात्र को प्राप्त हुआ है। वह ईश्वरीय ज्ञान निर्दोष पवित्र देववाणी में वर्णित है। ईश्वर निर्दोष है अतः उसका ज्ञान भी निर्दोष स्वतः सिद्ध है। अब बहुत लोग संस्कृत विद्या के रसास्वादन से अपरिचित हैं इस कारण उन वेदों के प्रति उतना पवित्र प्रेम प्रवाह उनके हृदय समुद्र में प्रवाहित नहीं। इससे उनके लाभार्थ वेद का जो गम्भीर तत्त्व जिस अध्याय में परिवर्णित है उस यजुर्वेद के ४० वें अध्याय को आपके सम्मुख उपस्थित कर प्रार्थी हूं कि श्रीमान् अवश्य ही इसे प्रेम दृष्टि से देख वेदों के गहन तत्त्व का परम आनन्द प्राप्त कर वेदों को अपने अन्तःकरण में स्थान देंगे।

प्रार्थी—

कालीचरन शर्म्मा,

अलापुरी।

॥ ईशोपनिशत् ॥

ओं

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् १

ईशा वास्यम् इदम् सर्वम् यत् किम् च जगत्याम् जगत्
तैन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्वितद्धनम् ॥

१-एक ही परम-ईश्वर से यह विश्व व्याप्त है, हरएक लोक इस सब ब्रह्मांड में इसी जगदीश से भरपूर है। हे मनुष्य! कर्तव्य कर्म करता हुआ स्वच्छ सुख भोग, इस बिनाशवान् जगत की चिंता छोड़ और किसी प्राणधारी के द्रव्य की कांक्षा वा तृष्णा मतकर—

عربی— الواجب واحد حاضر و ناظر في كل مقام محيط وموجود
يا يها الانسان تؤدوا فروضكم وتحصلوا سروركم و تقطعوا تعلقكم عن
هذا الدار الفانی ولاتا خذوا شيئاً بلاحق عن آی حیوان (نمبر ۱)

اردو— ایک هی خدا سب جگه حاضر و ناظر هے اور هر جگه محیط و
موجود هے اے انسان اپنا فرض ادا کرتا هوا اصلی سرور کو حاصل
کر اور اس فانی دنیا سے قطع تعلق کر اور کسی جاندار کی چیز بلا
حق مت لے—

أوم

الالتماس من طرف المترجم

يا ايها الناظرون اليوم أقدم قدح الحيات في خدمتكم الذي هدى لسلفكم الي الله تعالى وهو قانون الذى ظهر فى ابتداء العالم بوسيلة اربعة رسل يقال له الهام حقيقى (يعني ويد) وهو منزه عن التغير والتبدل والسهو والخطاء وهو فى زبان السنسكرت لان واجب الوجود برى من الخطاء والسهو فاى هذا قانونهٗ ايضاً يكون برياً عن التغير والتبدل مع ان قد قطعتم تعلقكم من لسان السنسكرت بهذا الوجه ما بقيت عنرته و وقعته فى قلوبكم انى أقدم جزواً واحداً من اربعين حصة يقال له (يجرويد) آتمنى لتنظروا بنظر العزت اليه ولتحصلوا نصيحةً في قلوبكم مع ان اطاقته كانت به لسان السنسكرت لاتحصل لاكني قد سعيت اطاقته ما قلت حررة

الخادم للمخلوق

كاليچرن شرما عربى فاضل

اعلنپوری من اطراف ضلع بداؤں

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः ।
एवं त्वयिनान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।२

कुर्वन् एव इह कर्माणि जिजीविषेत् शतम् समाः एवम् त्वयि न अन्यथा इतः अस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥

२–तब हे मनुष्य ! सौ वर्ष कर्तव्य करता हुआ जीने की अभिलाषा कर, अपने पड़ोसियों से शांत में रह, इसी में तेरा कल्याण है, और किसी में भी नहीं, कर्म फल का आश्रय न करके, कर्तव्य कर्म कर।

عربی — یایہاالانسان تحیوالمدت مائۃ عام وتؤدوا فروضکم ولاتحاربوا بجوارکم و فیہ فائدیکم ولافی غیرہ تعملوابغیرخیال و نتیجۃ (نمبر۲)

اُردو — اے انسان تو سو ۱۰۰ برس تک اپنا خاص فرض ادا کرتا ہوا جینے کی خواہش کر اور اپنے ہمسائے سے لڑائی نکر اسمیں ہی تیرا فائدہ ہے اور کسی میں نہیں اور اعمال و نتیجے کا خیال نہ کرکے کام کر—

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः ।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।३

असुर्याः नाम ते लोकाः अन्धेन तमसा आवृताः तान् ते प्रेत्य अपि गच्छन्ति ये के च आत्महनः जनाः ॥

३–उन लोकों को जिनमें दुष्ट आत्मा पापीजन रहते हैं, और जहां अत्यन्त गाढ़ अन्धकार तमोगुण भरा है, वे लोग शरीर छोड़ कर अवश्य जाते हैं जो अपनी आत्मा का हनन करते हैं, अर्थात् काम क्रोधादिक के वश व अविद्या दोषों से युक्त अपने अंतःकरण से विरोध करते हैं—

عربی — الذین یفعلون خلاف قلوبهم یعنی یقبلون بالعصیان الزنا والغیض بقیامهم فی مقامات الاشرار والجهلاء — (نمبر ۳)

اُردو — اون مقاموں میں جہاں گنہگار لوگ جاکر پیدا هوتے هیں وہ جو اپنے ضمیر کے خلاف خون کرتے هیں یعنی جو لوگ زنا اور غصه وغیرہ میں آلودہ هو کر اپنے ضمیر کے خلاف کارروائی کرتے هیں اونکی جائے قیام تاریک جگه هے۔

अनेजदेकम्मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्षत् । तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥ ४ ॥

अनेजत् एकम् मनसः जवीयः न एनत् देवाः आप्नुवन् पूर्वम् अर्षत् । तत् धावतः अन्यान् अत्येति तिष्ठत् तस्मिन् अपः मातरिश्वा दधाति ॥

४-परमात्मा एकही है, जो स्थिर नित्य और ज्ञानी है, मनकी गति से भी अत्यन्त वेगवाला है, जहां मनकी गति भी नहीं पहुंचती, वहां भी ब्रह्म विद्यमान है, वह भौतिक इन्द्रियों से नहीं जाना जाता है । इसीलिये मुनि जन अपने भौतिक इन्द्रियों को समेट कर अपने अंतःकरण में व्याप्त परमेश्वर को ज्ञान दृष्टि से सर्वत्र देखते हैं ।

عربی — الله واحد ازلی وقائم وعالم الکل الذی قدرته اقوی من قوت القلب یعنی یحیط المقام لایصل الیه القلب ولایعلم بهذه الحواس المادیه وبهذه الوجه تقصور العارفون الله تعالی فی قلوبهم بعلم المعرفته بغیر سلسلته الحواس المادیه — (نمبر ۴)

اُردو — خدا ایک هے جو قائم اور علیم کل هے اور جو من (دل) کی حرکت سے بهی زیادہ قدرت والا هے یعنی جہاں دل کی خواهش بهی نہیں پہونچتی وہ وهاں بهی موجود هے وہ ان حواس مادیه سے نہیں جانا جاتا اسلئے عارف (رشی منی) لوگ حواس

مادیہ سے علیحدہ ہوکر دل میں مقیم خدا کو علم معرفت کے
ذریعہ سے سب جگہ دیکھتے ہیں۔

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥५॥

तत् एजति तत् न एजति तत् दूरे तत् उ अन्तिके
तत् अन्तः अस्य सर्वस्य तत् उ सर्वस्य अस्य बाह्यतः ॥

५-वह सबको चलाता है परन्तु आप अचल है, अज्ञानियों से वह दूर है परन्तु ज्ञानी भक्तों के प्रति निकट है। वह सब जगत् में बाहर और भीतर सर्वत्र परिपूर्ण है।

عربی — هو يحرك الكل ولكن لا يحرك ذاته ويبعدون الجهال ويقرب بالعارفين
وهو موجود ظاهراً و باطناً۔ (نمبر ٥)

اُردو — وہ سب کو چلاتا ہے لیکن وہ خود نہیں چلتا اور جاہلوں سے وہ
دور ہے لیکن عارفوں کے بالکل نزدیک ہے وہ سب جگہ یعنی باہر
اور اندر حاضر و ناظر ہے۔

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥ ६ ॥

यः तु सर्वाणि भूतानि आत्मनि एव अनुपश्यति सर्व भूतेषु च आत्मानम् ततः न विजुगुप्सते ॥

६-जो सब प्राणियों को उस परब्रह्म में ज्ञान दृष्टि से देखता है और ब्रह्म को सब में व्याप्त मानता है, किसी भी प्राणधारी को तिरस्कार से नहीं देख सका—

عربی — من ینظر فی المخلوقات صفت الله تعالیٰ ویعلم انهٗ حاضر و ناظر فهو لایتنفر من شی ما۔ (نمبر ۶)

اردو — جو سب مخلوقات کو الله تعالیٰ میں علم معرفت کی نظر سے دیکھتا ھے اور اوسکو حاضر و ناظر جانتا ھے وہ کسی جاندار کو نفرت کی نظر سے نہیں دیکھتا۔

यस्मिन् सर्वाँणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥७॥

यस्मिन सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अभूत विजानतः
तत्र कः मोहः कः शोकः एकत्वम् अनुपश्यतः ॥

७–सुख दुःख ऐसे मनुष्य को आक्रमण नहीं कर सके, जो ज्ञान दृष्टि से परब्रह्म को सब प्राणियों में स्थित देखता है—

عربی — راحت الدنیا و تکیفها تؤثر علی الانسان الذی یعرف الله تعالیٰ بالمعرفت۔ (نمبر ۷)

اردو — دنیوی تکلیف اور آرام ایسے انسانوں کو کبھی رنجیدہ نہیں کرسکتے جو خدائے تعالیٰ کو علم معرفت کی نظر سے سب جگہ حاضر و ناظر دیکھتے ھیں۔

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धम
पापाविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूःस्वयंभूर्याथात
थ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

सः परिअगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम् अस्नाविरम् शुद्धम् अपापविद्धम् । कविः मनीषी परिभूः स्वयम्भूः याथा तथ्यतः अर्थान् वि अदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

८—यह सर्व प्राणियों में आच्छादित है, पूर्ण है, वह संपूर्णआत्मा है, न उसके सूक्ष्म शरीर है, न स्थूल शरीर है, न वह किसी प्रकार का चिन्ह है, न वह किसी की रचना है—वह सबका देखने वाला, ज्ञान गुण वाले आत्मा का भी स्वामी, सर्वोपरि सर्वत्र वर्तमान, अपनी स्थिति के लिये किसी की आश्रय न चाहने वाला, स्वयं सिद्ध, पवित्र, संपूर्ण सर्वज्ञ, विश्वरूप है, वह सदा से सब प्राणियों को कर्मों का फल ठीक ठीक देता है—

عربی—هو روح لکل الارواح و موجود فی الکل و برئی عن الهواء و نورحقیقی ولایجسم لطیفاً و کثیفاً ولایکون هدف ما ولایقرلد عن ما و ناظرلکل شئی وحقی یمالک روح القی تکون ذوصفات و علم واعلی لکل شی وفی کل مقام حاضر و ناظر و قائم بالذات و موجود بوجودحقیقی ومنزوٗ عن الرجس ویعلم الکل ویعطی الارواح ثمراة الاعمال انساناً وعدلاً و معبودنا—(نمبر۸)

اردو—وہ سب جانداروں کی جان ھے اور سب میں موجود ھے اور سب خواهشوں سے بری ھے اور نور حقیقی ھے نہ اوسکے لطیف جسم ھے نہ کثیف ھے نہ وہ کسی طرح کا نشان ھے نہ وہ کسی سے بنا ھے وہ سب کا دیکھنے والا ھے یہان تک کہ روح جو علم و صفات والی ھے اوسکا بھی مالک ھے اور سب سے بڑا و ھرجگہ حاظر و ناظر و قائم بالذات وجود حقیقی وپاک اور علیم کل ھے وہ سب روحون کے اعمالون کے ثمرات ازروے انصاف دیتا ھے وھی ھمارا معبود ھے

अंधन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते । ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया ँ रताः ॥ ९ ॥

अन्धम् तमः प्रविशन्ति ये अविद्याम् उपासते । ततः भूय इव ते तमः ये उ विद्यायाम् रताः ॥

९-वे अत्यन्त अन्धे हैं, दुर्भागी हैं, जो अविद्या का सेवन करते हैं, और सबसे अधिक दुखी वे हैं, जो अन्याय से हठधर्मी करके ज्ञानी बनते हैं—

عربی—من يكون سوء نصيب اعمى يقبلؤن في الجهالت ومن يدعون في العالم تعصباً و غروراً بغير الانصاف فهم ازيدون في المصيبت (نمبر ۹)

اُردو—وهٔ سب سے زیادہ اندھے ھیں اور بدقسمت ھیں جو جہالت میں مبتلا ھین اور سب سے زیادہ مصیبت میں وہ ھیں جو بے انصافی سے ازروے تعصب و غرور عالم ھونیکا دعوی کرتے ھیں

अन्यदेवाहुर्विद्ययाऽन्यदेवाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१०

अन्यत् एव आहुः विद्यया अन्यत् आहुः अविद्यया
इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विचचक्षिरे ॥

१०-दृढ़ ज्ञानी ऋषि निश्चित कर चुके हैं, कि इन्द्रियोंके वशीभूत हो कर जीना अविद्या का जीवन है. और आत्मा के अनुकूल होकर जीना विद्या का जीवन है, जिसका फल अविद्या के जीवन से ठीक विपरीत है।

عربی—علم اهل العرفان والاتقاء الحيات بماتحت حواس الخمسة تكون جهالة و بمطابقة الحق والضمير تكون الحيات معرفة التى نتيجة بالخلاف لنتيجة الحيات الجهالت (نمبر ۱۰)

اُردو—عارف اور متقی لوگون نے ازروے معرفت معلوم کیا ھے کہ حواس خمسہ کے ماتحت ھوکر جینا جہالت کی زندگی ھے اور اپنے ضمیر کے مطابق ازروے حق زندگی بسر کرنا عارفانہ زندگی ھے جسکا کہ نتیجہ بالکل جہالت کی زندگی کے برخلاف ھے

विद्यांश्चाविद्यांश्च यस्तद्वेदोभय ँ सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥
॥ ११॥

विद्याम् च अविद्याम् च यः तत् वेद उभयं सह ।
अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा विद्यया अमृतम् अश्नुते ॥

११ वह जिसको दोनों का सम्यक् ज्ञान हो जाता है, वारवार जन्म मरण के प्रवाह से पार होकर मोक्ष को प्राप्त होता है—

عربی — والذی یحصل علم السبیلین حقیقة وهو یخرج من سبیل التناسخ للنجات الحقیقت (نمبر ۱۱)

اردو — جسکو ان دونوں راستوں کا علم حقیقی ہوجاتا ہے وہ سبیل تناسخ کے دائرے سے باہر ہوکر نجات اصلی کو حاصل کرتا ہے

अंधन्तमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ संभूत्या ँ
रताः ॥ १२ ॥

अन्धम् तमः प्रविशन्ति ये असंभूतिम् उपासते । ततः भूय इव ते तमः ये उ संभूत्याम रताः ॥

१२ जो मूर्ख जड़ प्रकृतिको ईश्वर मानकर उपासना करते हैं, वे अज्ञानी हैं, अन्धे हैं, और जो दृश्यवान् पदार्थ की पूजा करते हैं वे और भी अधम हैं ॥

عربی — من یعبد المادة التی غیر مدرک فهو کافر و اعمی ومن یرغب فی اشیاء الدنیویة المفیدة جمالا و حسنا فهوا کفر و اعمی (نمبر ۱۲)

اردو — جو جاهل غیر مدرک مادے کو خدا جانکر عبادت کرتے هین وے
کافر اور اندهے هین اور جو دنیا کی چمکیلی و بهڑکیلی
چیزونکی خواهشون مین پهنسے هین وے اور بهی اندهے هین

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१३

अन्यत् एव आहुः सम्भवात् अन्यत् आहुः असंभवात्
इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विच चक्षिरे ॥

१३ विद्वान् साधु जन इसे दृढता से कहते हैं कि परमाणु की पूजा निष्फल है और ऐसेही दृश्यवान् पदार्थों की भी व्यर्थ है —

عربی — قال اهل العرفان و اهل الفقر تحقیقاً من یرغب فی الاشیاء الدنویة
جمالاً وحسناً فهو الداخل بغیر فائدة (نمبر ۱۳)

اردو — عارفون اور فقیرون نے ازروے تحقیق معلوم کیا هے که مادی اشیاء
اور انسے تعلق رکهنے والی چمکیلی و بهڑکیلی چیزون کی
خواهشات مین پهنسنا بے سود هے

संभूतिञ्च विनाशञ्चयस्तद्वेदोभयꣳ सह ।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा संभूत्याऽमृतमश्नुते ॥
॥ १४ ॥

संभूतिम् च विनाशं च यः तत् वेद उभयं सह । विनाशेन मृत्युम् तीर्त्वा संभूत्या अमृतं अश्नुते ॥

१४ वह जो इन दोनों को जानता हैं, मृत्यु के पीछे मोक्ष प्राप्त करताहै, और प्रकृति के ईश्वरी नियमको समझताहै —

عربی — والذی یعلم اثنین فیحصل نجات الحقیقی و یفهم من اشیاء
المادیة صفت القدرته (نمبر ۱۴)

اُردو—وہ جو دونوں کو جانتا ھے نجات حقیقی کو حاصل کرتا ھے اور
مانی چیزوں سے قدرت کی حقیقت کو سمجھتا ھے

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्या पिहितं मुखं ।
तस्त्वम् पूषन्न पावृणु सत्य धर्माय दृष्टये ॥
॥ १५ ॥

हिरगमयेन पात्रगा सत्यस्य अपिहितम् मुखम् । तत्
त्वम् पूषन् अपावृणु सत्य धर्माय दृष्टये ॥

१५ हे तू जो जगत्को पालता है उस सत्य स्वरूपको प्रकटकर जो स्वर्णमय ज्योतिके आवरणसे ढका है, जिससे हम सत्य रूप का दर्शन करें, और अपना पूर्ण धर्म जानें ॥

عربی—یایها الرازق لدنیا تظهر السرور الذی یبعدعنا باشهاء الجمواتة والصورت
الحسینة (یعنی زینت صورالدنیویة بقعد عنا بسرورک)
حتی نعلم النورالحقیقی الذی فرض علینا (نمبر ۱۵)

اُردو—اے دنیا کے رازق تو اُس نورانی عین السرور کو ظاھر کر جسکو
کہ دنیا کی چمکدار اور خوبصورت چیزوں نے ھم سے علیحدہ کر
رکھا ھے (یعنی دنیاوی چیزوں کی حسن و آرائش ھم سے تیرے
سرور کو علیحدہ کئے ھوئے ھے) تاکہ ھم اوس نور حقیقی کو
جانکر اپنے فرض حقیقی کو سمجھیں-

पूषन्नेकर्षेयम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्
समूह । तेजो यत्ते रूपंकल्याणतमन्तत्ते
पश्यामि । योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥
॥१६॥

पूषन् एकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह । तेजः यत् ते रूपं कल्याणतमम् तत् ते पश्यामि । यः असौ पुरुषः सः अहं अस्मि ॥

१६ हे पालक ! ऋषियों के ऋषि, न्याय कर्ता सूर्य शाश्वत प्रकाश, सृष्टिप्राण, यथाक्रम अपनी किरणोंको इकट्ठा कीजिये, जिससे अति कल्याण कारी जो आपका तेज है उस स्वरूपको ज्ञान दृष्टिसे मैं देखूं, यही परमात्मा से मेरी एकाग्र उपासना है ॥

عربی — یا ایها الرازق و عارف العارفین والعادل و منبع عین السرور تجمع شعاع النور فی قلبی حتی أنظر بوسیلتک النور الحقیقی الذی یحصل به راحت لکل هذه هواء قلبی (نمبر ۱۶)

اردو — اے رازق و عارفون کے عارف و عادل پاک و منبع عین السرور آپ اپنے نوری شعاعون کو میرے دلمین اکٹھی کیجئے تاکہ آپ کے اوس نور حقیقی کو جوکہ راحت کلی کا دینے والا ہے عام حقیقت کی بینائی سے دیکھون یہ ہی میری دلی خواہش ہے

वायु रनिल ममृत मथेदं भस्मान्तꣳशरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर क्रतो स्मर कृतꣳस्मर ॥१७।

वायुः अनिलं अमृतं अथ इदं भस्मान्तं शरीरं । ओम् क्रतोस्मर क्रतोस्मर कृतंस्मर ॥

१७ वायु सूक्ष्म शरीरको धारण करैगा, और स्थूल शरीर भस्मांत तकही स्थिर रहेगा-हे प्राणिन् ! जो कर्म बीज बोये हैं बार बार स्मरण रख कि वही तू आगे भोगेगा ।

عربی — اما جاء والهواء في الصورة الاصلية (یعنی جسم لطیف) و جسم کثیف یبقی فی آخره قد یا ایها الروح کل ما تزرع تخیل مرة بعد مرة لانه یحصل ثمرة انتهاء — نمبر ۱۷

اُردو — جب ہوا اعلی حالت میں (جسم لطیف) میں آئیگی اور جسم کثیف چلنے کے آخرنگ ہی قایم رہیگا اے روح جو تخم اعمال بوئے ہیں بار بار اونہیں کا خیال کر کیونکہ آخر میں اونہیں کے ثمرات برداشت کریگی

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराण मेनो भूयिष्ठांते नम उक्तिं विधेम ॥ १८ ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनः भूयिष्ठाम् ते नम उक्ति विधेम ॥

१८ हे प्रकाश स्वरूप परमेश्वर ! आप सब विद्याओं के मूल हो हममें इस ज्ञान को उत्तेजित करो और सत्मार्ग पर चला कर हमारे दुःख दूर करो, इस उद्देश्य से हम बार बार आपकी स्तुति करते हैं और उपासना करते हैं ।

عربی — یا ایہا المالک الملک انت عین السرور و مبنع لجمیع علوم الحقیقی اعطی لنا علوم الحقیقة وجعلنا علی صراط المستقیم لتنجینا عن التکالیف من نلحظ هذا المقصد و نعبدک (نمبر ۱۸)

اردو — اے عین السرور خداوند کریم تو تمام علوم حقیقی کا منبع ہے ہمیں اوس علم حقیقی کو دے اور سیدھے راستہ پر چلاکر تمام تکالیف دور کر ہم اس مقصد کو مدنظر رکھکر تیری عبادت و ریاضت کرتے ہیں





اصول الاریہ السماج

(۱) لکل علوم حقیقی والثانی ولکل شے علم منہا فعلتہا الاولی بارتعالیٰ
سب علوم حقیقی اور دیگر علوم سے جو چیزیں جانی ہیں اون
سب کی علت اولیٰ باری تعالیٰ ہے

(۲) باریتعالیٰ عین الحق علیم عین السرور وغیر محدود قادر مطلق و عادل
و رحیم و بعید عن التولید ولا انتہا لہ و غیر عیب و ازلی ولا مثل لہ وھو
یعین لکل شے ورب الارباب و حاضر و ناظر و یعلم لکل سر ولازوال لہ
وغیر فانی و لایخوف من شے وابدی وصاف عن العیوب و خالق لکل
شے فعبادتہ واجبۃ

باریتعالیٰ عین الحق علیم عین السرور اور غیر محدود وقادر مطلق
و عادل و رحیم و بری از تولید ولا انتہا و بے عیب و ازلی و بیمثل و
سب کا سہارا اور رب الارباب و حاضر و ناظر سب کا رازدان و
لازوال و غیر فانی و بیخوف و ابدی و پاک اور خالق ہے اسکی
عبادت کرنا واجب ہے

(۳) لکل علوم حقیقیے کتابہا الوید قرأتہ واقرائہ و سماعہ واسماعہ واجب
علیٰ کل فرقتہ الآریۃ
وید تمام علوم حقیقی کی کتاب ہے۔ اوس کا پڑھنا پڑھانا اور سننا

سنانا سب کا فرض ہے۔

(۴) لقبول الحق و ترک الباطل لیستعدون
حق کے قبول کرنے اور باطل کو ترک کرنے میں ہمیشہ مستعد
رہنا چاہئے

(۵) واجب علیٰ کل شخص ان یمیز بین الحق و الباطل
سب کام دھرم کے مطابق یعنی حق اور باطل کو تمیز کرکے کرنے
چاہئیں۔

(۶) فلاح الدنیا ہدف السماج فرض یعنی یرتفع فی الاجسام و المجالسہ و
الارواح

دنیا کی بھلائی کرنا اِس سماج کا خاص فرض ہے۔ یعنی جسمانی مجلسی اور روحانی ترقی کرنا

(۷) واعمل یحب بحسب منسبہ

سب سے با محبت اپنے فرض کے مطابق مناسب برتاؤ کرنا چاہئے

(۸) یبعدعن الجہل ویرتفع فی علم الحق

جہالت کو دور کرنا اور علم حق کی ترقی کرنی چاہئے

(۹) لایصیرفی ترقیہ بل ترقہ، فی ترقی الجماعۃ

ہر ایک کو اپنی ترقی پر قانع نہ رہنا چاہئے بلکہ سب کی ترقی میں اپنی ترقی سمجھنی چاہئے۔

(۱۰) یجب علی کل انسان ان یعمل با اصول عامتہ و اضافی اصول الفرائد یختار اصولہا۔

سب انسانوں کو قرائد عامہ کے متعلق اصولوں کے ماننے میں ماتحت رہنا چاہئے۔ اور ہر ایک کو فائدہ رسانی کے اصولوں میں خود مختار رہنا چاہئے

المترجم

کالیچرن شرما واعظ الاریہ سماج اعلاپوری



गोपेश्वर बाबू मेहरा बी० ए०, मालिक व मैनेजर

की आज्ञा से

लोटस प्रेस, मदन मोहन दरवाजा, आगरा में मुद्रित।